हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04 17/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi Sihag

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूं, ते दिन मिले न राति।।

प्रस्तुत सुक्ति प. श्यामसुंदर दास द्वारा ~~संपादित~~ संपादित 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' नामक खंड से उद्धृत है। प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरदास ईश्वर के विरह में भक्त की स्थिति का मार्मिक वर्णन करते हैं।

व्याख्या :- कबीरदास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति ईश्वर के भक्ति-मार्ग पर नहीं चल रहे हैं, वे दिन-रात का होना तो उनके लिये ही सार्थक है। किन्तु, जिस व्यक्ति के लिये राम अर्थात् कबीर के निर्गुण ईश्वर की प्राप्ति ही एकमात्र लक्ष्य है उस व्यक्ति के लिये दिन और रात एक समान है अर्थात् उनका चैन तो दिन और रात, चाहे कोई भी समय हो खोया ही रहता है। कबीर के अनुसार ईश्वर की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रति ही उनके जीवन में प्रभात के प्रकाश का आगमन कराएगी।

विश्लेषण :-

(क) निर्गुण ईश्वर के रूप में 'राम' शब्द का प्रयोग करना ताकि जनसामान्य की भावना के अनुरूप ही निर्गुण भक्ति के विचारों का प्रसारण हो सके।

(ख) भाषा - पंचमेल खिचड़ी, इसमें 'राति' जैसे शब्द पंजाबी व अवधी दोनों के नजदीक हैं।

(ग) 'सूं' शब्द राजस्थानी के नजदीक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल के कृष्णभक्त कवि एवं 'पुष्टिमार्ग के जहाज' सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' प्रसंग से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में सूर ने राधा एवं गोपियों की विरह वेदना के चित्र खींचे हैं।

व्याख्या - सूर जी कहते हैं कि कृष्ण के विरह में मन को रखने के लिये राधा ने वीणा का वादन शुरू किया ताकि रात्रि का समय कट सके परन्तु वीणा के मधुर संगीत को सुनकर चन्द्रमा का रथ रुक गया और रात्रि करने का क्रम नहीं ले रही।

इस पर राधा अत्यन्त करुणामयी दशा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैं कहती है कि प्रेम रूपी बंधन में पड़े हुए के लिये तो ये सब उपाय निरर्थक हैं। जब से श्रीकृष्ण मथुरा गये हैं तब से उनके नैनों में से अश्रु रुक ही नहीं रहे हैं। ये शीतल चन्द्रमा भी उन्हें अग्नि की भाँति तप्त लग रहा है। ऐसी परिस्थिति में धीरज रखना असंभव है। सूर कहते हैं कि श्रीकृष्ण के दर्शन से ही इनकी पीड़ा शांत हो सकती है। अन्य जतन करना झूठा एवं निरर्थक है।

विशेष
(क) विप्रलंभ श्रृंगार का सुंदर वर्णन किया गया है।
(ख) शुरुआती दो पंक्तियों का अप्रस्तुत विधान यदि चमत्कृत करता है परन्तु कुछ काल्पनिक सा प्रतीत होता है।
(ग) 'कमल नयन' में रूपक का प्रयोग द्रष्टव्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध छायावादी कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'' की कालजयी कविता 'राम की शक्ति-पूजा' से ली गई है।

इन पंक्तियों में निराला ने प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से राम के मन की उथल-पुथल एवं उठने वाले भावों का ~~अत्यन्त~~ अत्यन्त जीवंत वर्णन किया है।

व्याख्या :- राम एवं रावण के युद्ध के पश्चात् सांयकाल में सेनाओं के लौटने के पश्चात् 'सानु-सभा' के दृश्य में राम विचारधीन मुद्रा में हैं। निराला कहते हैं कि इस अमानिशा में संपूर्ण नभ अंधकार युक्त है अर्थात् राम के मन में विजय हेतु कोई उपाय नज़र नहीं आ रहा। राम को रण-क्षेत्र में रावण के साक्ष्य शक्ति को देखने के पश्चात् कोई भी तरीका नहीं सूझ रहा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कि जिससे वे सीता को प्राप्त कर सके। पीछे स्थित समुद्र की लहरों के माध्यम से राम के मन की उथल-पुथल एवं सिहरन का चित्रण किया गया है तो एक जलती मशाल इतने अंधेरे में भी राम के हृदय में व्याप्त 'आशा की किरण' का प्रतीक है।

विशेष (क) अंधेरे के जटिल बिंबों का प्रयोग चारों पंक्तियों में किया गया है। निर्मला जैन ने निराला के अंधेरे के बिंबों की क्षमता की प्रशंसा भी की है।

(ख) प्रतीक क्षमता अतुलनीय है।

(ग) छायावादी कवि होने के कारण प्रकृति वर्णन भी सुंदर है, पर यहाँ प्रकृति का रौद्र रूप दिखाई पड़ता है।

(घ) भाषा तत्सम प्रधान है व कथ्य के अनुरूप है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि 'सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय' की प्रसिद्ध कविता 'असाध्य वीणा' से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने बौद्ध दर्शन 'शून्यवाद' के सिद्धान्तों के आधार पर 'केशकंबली' की मनःस्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या :- कविता में 'असाध्य वीणा' को साधने में सफल रहने के पश्चात, 'केशकंबली' द्वारा कहा जाता है कि इस वीणा को बजाने में उसका कोई हाथ नहीं है। चूंकि यह वीणा अपने संगीत की उत्पत्ति में इसके निर्माता, किरीटी द्रुम, विभिन्न पक्षियों एवं अन्ततः उस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महामौन ब्रह्म की आभारी है जिसने सबको संगीत दिया है, अतः वीणा के संगीत का दान के लिये केशकंबली ने अपना अहंकार का समर्पण कर दिया था। इसी आत्मसमर्पण के भाव के कारण ही वीणा में सुरों की उत्पत्ति हुई।

विशेष - बौद्ध-दर्शन 'शून्यवाद' एवं 'आगार्य विज्ञानवाद' का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

(ख) 'शब्दहीन' - 'सब में गाता है' में विरोधाभास अलंकार का सुंदर प्रयोग

(ग) प्रबंधात्मक लंबी कविता

(घ) तत्सम प्रधान भाषा शैली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध सूफी कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' की उत्कृष्ट रचना 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग' खंड से ली गई हैं।

पंक्तियों में मुहम्मद कवि ने भाद्रपद माह की विभिन्न परिस्थितियों के साथ नागमती की वियोग दशा का हृदय-स्पर्शी वर्णन किया है।

व्याख्या:- जायसी नागमती की विरह स्थिति की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि भाद्रपद माह में नागमती का विरह अत्यन्त भारी व सघन हो गया है, उसे प्रिय के बिना जीना दूभर लग रहा है। उसे इन अंधियारी रातों को काटना अत्यन्त कठिन कार्य लग रहा है। प्रिय के दूर चले जाने के बिना विरह रूपी नाग उसके पलंग पर आकर डस रहा है। वह अकेली रहकर हमेशा नायक के आने की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाट जोहती रहती है। इस माह में बिजली चमक रही है, आकाश में घटाएँ छा रही है। बारिश के बरसने के साथ ही मेरी आँखों से भी आँसू बह रहे हैं, रुकने का नाम नहीं ले रहे। बारिश के कारण पूरी पृथ्वी पर जल ही जल भर गया है परंतु प्रिय के आने की कोई संभावना नहीं दिख रही है।

काव्यगत सौन्दर्य

(क) शुक्ल जी के अनुसार "नागमती वियोग हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।"

(ख) विरह को नाग का रूपक दिया गया है।

(ग) नैनों का बहना एवं हृत का रिसना की तुलनात्मक सुन्दरता नागमती के वियोग को एक साधारण नारी के विरह के समकक्ष लाती है, जो कि जायसी की एक अद्भुत उपलब्धि है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' में राम का आत्मसंघर्ष वस्तुतः कवि निराला का ही आत्मसंघर्ष है।' इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति-पूजा' आख्यानपरक ढाँचे पर लिखी गई लंबी कविता है। 'राम' के प्रसिद्ध मिथक और निराला की छायावादी परंपरा के मिश्रण के कारण यह अपनी संवेदना की दृष्टि से भी बहुअर्थी हो गई है। जहाँ विभिन्न आलोचकों द्वारा राम की शक्ति-पूजा की संवेदना में सीता की मुक्ति, शक्ति की मौलिक कल्पना करने, सत्-असत् के द्वन्द्व जैसे अर्थ निकाले हैं, वहीं 'दूधनाथ सिंह' के अनुसार इस कविता को पढ़ने पर लगता है कि 'राम' की कथा स्वयं निराला' की ही कथा है; राम का आत्मसंघर्ष निराला का ही आत्मसंघर्ष है।

वस्तुतः सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर 'राम' और 'निराला' के तार जुड़े हुए नज़र आते हैं। 'राम की शक्ति-पूजा' की शुरुआत 'रवि हुआ अस्त' से हुई है, जहाँ रावण-राम के अपराजेय समय में राम पराजय की ओर बढ़ते प्रतीत हो रहे हैं। यही कथा वास्तविक जीवन में निराला की भी है। 'सरोज' की मृत्यु के पश्चात् निराला भी निराशाबोध से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भर चुके हैं-

"पश्चात, देखने लगी मुझे, बँध गये हस्त
फिर खिंचा न धनु, मुक्त जो बँधा मैं, हुआ त्रस्त।"
(राम की शक्ति पूजा)

"आते वे मुझ पर तुले तूर्ण
देखता रहा मैं खड़ा अपल (सरोज-स्मृति)
वह शर-क्षेप, वह रण-कौशल"

शक्ति-पूजा में राम के सामने सीता की मुक्ति की समस्या है, वहीं निराला के जीवन में भी उनकी पत्नी मनोहरा देवी का देहांत हो गया था। ज्योतिष के दो विवाह होने के भण्य की घोषणा को भी निराला ने नकार दिया था -
(शक्ति-पूजा)
"जानकी हाय! उद्धार प्रिया का हो न सका।"
"खंडित करने को भाग्य अंक, (सरोज स्मृति)
देखा भविष्य के प्रति अशंक।"

जहाँ राम की शक्ति-पूजा की मूल समस्या यह है कि - 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति', वहीं सरोज-स्मृति में निराला की समस्या आर्थिक है। साथ ही वे अपने समय की सामंती मानसिकता, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की दहेज लालसा एवं रूढ़ीवादी साहित्य आलोचकों

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के प्रति भी नाराज दिखते हैं।
"मैं रती कविता लेकर उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश
बैठा प्रान्त में दीर्घपहर
× × × ×
गाता संपादक के गुण, यथाभ्यास
पास की नोंचता हुआ घास।"

इस प्रकार मूल समस्या में साम्य के बाद वहीं सरोज-स्मृति में जहाँ निराला टूट गये हैं, वहीं 'शक्ति-पूजा' में निराला ने अपने महाप्राणत्व के बल पर त्रासदी को सुखांतता की ओर मोड़ दिया है तथा स्थितियों के हाथों नाचने से इंकार कर उन्हें परिवर्तित करने का साहस किया है।

जामवंत के सूझाव देने (शक्ति की करो मौलिक कल्पना) राम की पूजा पद्धति हठयोग पर आधारित हैं और निराला भी अपने जीवन में योगाभ्यासी थे।

इसके साथ-साथ दुर्गा के इंदीवर ले जाने पर राम का 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' जागृत होता है। वस्तुत: यह निराला का ही महाप्राण मन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो यथास्थितिवादी मानसिकता को चीर-देना चाहता है। अपना नेत्र देने का साहस की वह चरम बिन्दु है जो "दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही" वाले निराला के ~~उदासीन~~ उदासीन मन को 'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन' के स्तर पर लेकर जाता है

अन्य स्तरों पर राम का शारीरिक सौन्दर्य उनकी लंबी जटाएँ, मजबूत शरीर भी निराला के समान ही प्रतीत होता है

इस प्रकार विभिन्न अर्थों में एक अर्थ के रूप में राम की शक्ति-पूजा में राम के आत्मसंघर्ष के साथ निराला के आत्मसंघर्ष की विवेचना तार्किक की है। वस्तुतः छायावाद के दौर में कविताओं में वैयक्तिकता का प्रक्षेपण करने की प्रवृत्ति भी निराला में अधिक रही है। चाहे वह 'सरोज-स्मृति' हो या 'तुलसीदास' और अगले स्तर पर राम की 'शक्ति-पूजा' भी।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) काव्य-शिल्प के धरातल पर भारत-भारती का विवेचन कीजिये। 15

मैथिली शरण गुप्त का समय द्विवेदी युग (1900-1918 ई.) का समय है जब महावीर प्रसाद द्विवेदी जी खड़ी बोली का परिष्करण कर उसे पद्य भाषा के रूप में पूर्णत: स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। संक्रमण के इस दौर में ही गुप्त जी का काव्य-शिल्प विकसित हुआ है जो 'भारत-भारती' में भी ~~दृष्टव~~ दृष्टिगोचर होता है।

(क) काव्यरूप:- इस स्तर पर समस्या यह है कि इसे प्रबंधकाव्य माना जाये या मुक्तक। रचना में अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के संकेतों के साथ-साथ भारत की कथा भी चलती रहती है, जो इसे प्रबंध के निकट लाती है, परन्तु प्रबंधात्मकता के पूरे गुण नहीं मिलते। मुक्तक कहना उचित न होगा। अतः इसे 'हाली' के 'मुसद्दस' की भाँति 'उद्बोधन काव्य' की संज्ञा भी दी जा सकती है।

(ख) भाषा:- गुप्त जी का दौर आचार्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संक्रमण का दौर है। इस दौर की मूल समस्या खड़ी बोली को काव्यभाषा के रूप में प्रतिस्थापित करने की थी। फलतः इस प्रयोग में भाषा के स्तर पर अभिधात्मकता एवं इतिवृत्तात्मकता आ गई है -

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये।"

(ग) छंद योजना :- गुप्त जी ने अपने प्रिय छंद हरिगीतिका का प्रयोग भरपूर मात्रा में किया है परन्तु मध्यकाल के अन्य छंद जैसे कवित्त, सवैयों के प्रयोग के प्रति गुप्त जी प्रायः उदासीन ही रहे हैं।

(घ) बिंब योजना :- गुप्त जी ने सजग होकर इस प्रकार के काव्य-धर्मों का प्रयोग रचना में नहीं किया है परंतु कुछ स्थानों पर बिंबात्मकता के दर्शन हो ही जाते हैं

"हैं निठुरों के हाथों से सम्मूर्तियाँ खण्डित हुई
बहु मंदिरों की वस्तुओं से मस्जिदें मंडित हुई।"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अलंकार योजना :- अलंकारों के स्तर पर विशेष प्रयोग तो नहीं दिखते परन्तु कुछ स्थानों पर अतिशयोक्ति एवं उपमा अलंकार का प्रयोग द्रष्टव्य है

"वह पेट उनका पीठ से मिलकर हुआ क्या एक है,
मानो हड्डियों में परस्पर निगलने की टेक है।"
(उपमा)

"वे आँख ही थे जो स्वर्ग के लिये जीते न थे।"
(अतिशयोक्ति)

इस प्रकार अन्य स्तरों पर भूतकाल के विश्लेषण में तत्सम शब्दावली (उत्कर्ष, संयम, प्राण), अविच्छेद में अंग्रेजी शब्दावली (हिस्ट्री, बैलून) आदि का प्रयोग, जनसामान्य की जागृति की सामान्य, सरल भाषा ही वे तत्व हैं जो गुप्त जी की कविता में दिखलाई पड़ते हैं। शिल्प के स्तर पर चमत्कृति की मात्रा अधिक न होने के बावजूद गुप्त जी की यह रचना अपनी प्रसिद्धि में बेजोड़ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'राम की शक्ति-पूजा' की भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति-पूजा' की प्रशंसा उसकी संवेदना के विभिन्न हल्कों के साथ-साथ एक और वजह से की जाती है - वह है उसकी भाषा शैली। छायावाद में द्विवेदी युगी की अभिधात्मक भाषा को लयात्मकता, लोचनशीलता, तन्मयता देने के प्रयास हुए। उपर्युक्त कविता में ये सभी तत्व इतने घनत्व के साथ उपस्थित हैं कि इसे खड़ी बोली या 'भाषा की सिद्धावस्था' भी कहने लगते हैं।

वस्तुतः पौराणिक हल्दभूमि होने के कारण निराला ने विषय-वस्तु के अनुरूप ही तत्सम शैली का प्रयोग किया है। समास गुण की दृष्टि से इसकी प्रथम अठारह पंक्तियाँ तो दाँतो तले अंगुलियाँ दबाने को मजबूर करती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो निराला भारतेन्दु को जवाब दे रहे हों, जिनके अनुसार खड़ी बोली में सामासिक गुण की कमी होती है। निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"अनिमेष-राम विश्वजिदिव्य शर-भंग-भाव,

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विद्धांग - वृद्ध - कोदण्ड - मुष्टि - खर - रुधिर स्राव"

ऐसा नहीं है कि निराला की भाषा एक-आयामी थी। यदि ऐसा होता तो यह भाषा पाठक को आनंदित नहीं, आतंकित करती। विषयानुरूप विजातीय शब्दों का प्रयोग भी इसमें मिलता है-

कुद्ध कपि विषम हूह (अवधी शब्द)
क्षिप्र वार पर वार (फारसी शब्द)

निराला की भाषा की एक और क्षमता है उसकी ध्वन्यात्मकता या 'नाद-सौन्दर्य'। ये गुण आने से कविता की आयु बढ़ती है। कविता में शब्दों की पुनरावर्ती का चमत्कार दिखता है जैसे रावण की अट्टाहस को 'खल-खल', शक्ति के दृगों की अग्नि को 'झक-झक', ब्रह्मास्त्र की चमक को 'लक-लक' जैसे शब्दों से संबोधित किया गया है।

भाषा के प्रयोगों में वर्णों के उचित प्रयोग से पाठक को गिरफ्त में लेने का कौशल भी निराला के पास है जो उन्हें तुलसीदास के समकक्ष खड़ा करता है। जहाँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उन्हें ओज गुण की अभिव्यक्ति करनी होती है वहाँ वे संयुक्त वर्णों व महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग करते हैं जैसे - 'दृढ़ प्रतिज्ञ धरा' वहीं अन्य स्तरों पर अक्षरांत ध्वनियों की पुनरावर्ती भी चमत्कृत करती है जैसे - "जल-राशि, राशि-जल पर चढ़ता खाता पछाड़।"

इसप्रकार निम्न स्तरों पर भाषा के कमाल से निराला ने लंबी कविता को महाकाव्योचित औदात्य से परिपूर्ण कर दिया है। कविता में जैसी भाषा का प्रयोग, शब्दों का गठन, सम्मोहन प्रभाव दिखाई पड़ता है, इलियट के शब्दों में कुछ रचनाएँ समझ आने से पहले ही पाठक में रोमांचित करने लगती है, जैसे-जैसे अर्थ बोधन होता है आस्वादन का स्तर और भी घनीभूत हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध छायावादी नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के ऐतिहासिक विषय वस्तु युक्त आधुनिक राष्ट्रीय चेतना के नाटक 'स्कंधगुप्त' से ली गई है।

नाटक के इस अंश में देवसेना अपने प्रेम की बलि देकर स्कंध को कर्तव्यपालन के मार्ग पर बढ़ाने का प्रयास करती है।

व्याख्या : नाटक के अंतिम हिस्से में जब स्कंधगुप्त विजय प्राप्त कर देवसेना से विवाह करने की इच्छा लेकर देवसेना को प्रस्ताव रखता है तो देवसेना कहती है कि सामाजिक हितों की पूर्ति के लिये उसे अपने प्रेम का बलिदान स्वीकार्य है वह नहीं चाहती कि स्कंध अपने कर्तव्यों से विमुख हो। इस कारण वह दुखमय जीवन को काम्य समझती है ताकि समाज हित सध सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष :- देवसेना की प्रेम दृष्टि मूलतः छायावादी रोमांटिक किस्म की है जिसमें भौतिक स्पर्श को महत्व न देकर भावनाओं को महत्व दिया जाता है।

(ख) प्रेम में अध्यात्म का मिश्रण दिखलाई पड़ता है।

(ग) 'कष्ट हृदय की कसौटी है' जैसे सूत्र-वाक्यों में प्रसाद की जीवन दृष्टि झलकती है।

(घ) तत्सम भाषा का प्रयोग जो परिवेश के अनुरूप है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन के दौर के प्रसिद्ध नाटककार 'मोहन राकेश' के प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से ली गई हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में प्रियंगु मल्लिका को राज्य-प्रशासन में राजनीति का महत्व बताकर उसे हृदय-रचना से अलग बताने का प्रयास कर रही है।

व्याख्या :- नाटक के दूसरे अंक में जब प्रियंगु मल्लिका से मिलने आती है तो वह चाहती है कि कुछ ऐसा प्रयास किया जाय ताकि कालिदास के मन से ग्रामीण जीवन के प्रति मोह, मल्लिका का प्रेम निकल सके। इसी लिये वह मल्लिका को समझाने का प्रयास कर उसका विवाह किसी राज्य के अधिकारी से करवाने हेतु उसे बहकाने का प्रयास करती है। वह कहती है कि कालिदास अपनी भावनाओं के कारण राजनीति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परम ध्यान देता है जिस कारण से किसी त्रिनुटि होने के कारण बहुत बड़ा अनर्थ हो सकता है।

प्रासंगिकता :- प्रस्तुत पंक्तियाँ आज की वैश्विक राजनीति में भी अत्यन्त सटीक बैठती है।

- भाषा तत्सम एवं परिवेश के अनुकूल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'नई कहानी' धारा के प्रतिनिधि कहानीकार 'कमलेश्वर' की 'खोई हुई दिशाएँ' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में कनॉट पैलेस पर बैठा व्यक्ति शहरी जीवन के यांत्रिक प्रेम, ममता एवं औपचारिकता को देखकर शहरी जीवन की विषमताओं का अनुमान करता है।

व्याख्या :- कमलेश्वर ने कहानी में बताया है कि शहरी जीवन का परिवेश किस प्रकार संबंधों को भीतर से खोखला कर देता है। शहरी परिवेश में रहकर व्यक्ति औपचारिक हो जाते हैं जबकि ग्रामीण जीवन में आत्मीयता विद्यमान रहती है।

इसी प्रकार शहरी जीवन की माताओं में वात्सल्य जैसे भावों में भी गहराई नहीं है। वे ~~केवल~~ इस शहरी जीवन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की विडंबनाओं के आगे औपचारिकता का शिकार हो गई है।

विशेष :- ग्राम व शहरी जीवन का अंतर दिखता है।

- शहरी जीवन में संबंधों की टूटना, विरलता का वर्णन है।
- सूत्रभाषा एवं भाषायी सामर्थ्य की दृष्टि से अंतिम पंक्तियाँ जानदार बन पड़ी हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भीष्म साहनी' की कहानी 'चीफ की दावत' से ली गई हैं।

लेखक ने बॉस के सामने जाने के बाद माता की मनोस्थिति का मार्मिक चित्रण किया है कि

- प्रेमचन्द की बूढ़ी काकी का अगला रूप लगता है।
- आधुनिक जीवन में बूढ़े माता-पिता के प्रति संवेदनहीनता का मार्मिक प्रदर्शन।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'मैला आँचल' का नायक आप किसे मानते हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' की रचना हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक क्रान्तिकारी घटना है। फणीश्वरनाथ रेणु ने अंचल के सर्वांग को जिस स्पष्टता, पूर्णता एवं रोमांचकता के साथ उभारा है, वह सराहनीय है। मैला आँचल के बारे में कहा जाता है कि जो कृति प्रेमचन्द ने 'होरी' जैसे निम्न वर्गीय चरित्र को उपन्यास का नायक बनाकर दी, उसी अगले स्तर की कृति रेणु ने 'अंचल' को नायकत्व प्रदान करके दी।

उपन्यास के नायक का निर्धारण वस्तुतः तीन कसौटियों के आधार पर किया जा सकता है - उपन्यास किस चरित्र के इर्द, गिर्द बुना गया है, किस चरित्र के विभिन्न पक्षों को उभारने का प्रयास लेखक ने किया है और कौनसा चरित्र उपन्यास पढ़ने के बाद पाठक की स्थायी स्मृतियों का हिस्सा बन जाता है?

इन कसौटियों पर कसें तो तीन चरित्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उभरकर आते हैं - बावनदास, कालीचरण और डॉक्टर प्रशान्त।

बावनदास रचना में एक महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराता है परन्तु अंत में दुलारचंद कापरा जैसे अपराधियों के हाथों उसकी मृत्यु हो जाती है। साथ ही अन्य पात्रों की तुलना में उसका महत्व भी कम है।

जहाँ कालीचरण की बात है अपनी क्रान्तिचेतना के बल पर वह पाठक को रोचक तो लगता है परन्तु अंतिम पृष्ठों पर उसकी अनुपस्थिति उसके नायकत्व को खारिज कर देती है।

तीसरा सबसे महत्वपूर्ण चरित्र है - डॉ० प्रशान्त। वस्तुतः तीनों चरित्रों में सबसे अधिक प्रखर उपस्थिति डॉक्टर प्रशान्त की है। अंतिम पृष्ठों में भी उसकी उपस्थिति है परन्तु अंचल की तुलना में प्रशान्त को नायकत्व प्रदान करना अंचल के अन्य पक्षों की अवहेलना करना हो जायेगा। साथ ही डॉ० प्रशान्त का यह कथन भी उसे अंचल की तुलना में अलग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्व देता है-
"मैं साधना करूंगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैल आँचल तले।"

अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है की उपन्यास में जिस पात्र का महत्व सबसे अधिक है वह स्वयं मेरीगंज ही है। लेखक ने पूरा उपन्यास ही मेरीगंज के इर्द-गिर्द ही बुना है। भौगोलिक वर्णनों की दृष्टि से निम्न पंक्तियाँ महत्वपूर्ण है-
बहुत बड़ा गाँव है मेरीगंज। बारहो बरन के लोग रहते हैं। इसके पूरब में एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात के दिनों में कमला नदी भर जाती है।.. "
साथ ही सांस्कृतिक वर्णनों के स्तरों पर भी लोकजीवन की झांकियाँ, नृत्य, संगीत की प्रस्तुति रेणु ने सघन रूप में की है-
"नायक जी हो नायक जी। खोल देहो किवड़िया हो नायक जी।"
अन्य राजनीतिक आर्थिक समस्याओं के स्तर पर मेरीगंज के संपूर्ण समस्याओं का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

वर्णन रेणु ने पूरी तन्मयता के साथ किया है। वैसे भी भूमिका में रेणु की प्रतिज्ञा भी इसी बात की पुष्टि करती है -

"यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास xxxx कथानक है पूर्णिया। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को संपूर्ण पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है।"

इस प्रकार कि उपर्युक्त विवेचन से देखने पर हमें उपन्यास के अंचल अर्थात् मेरीगंज को ही नायक मानना पड़ता है। वैसे भी उपन्यास पढ़ने के पश्चात जो चरित्र पाठक के मन को आलोड़ित ~~स्प~~ स्पंदित करता है, वह मेरीगंज ही है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल मार्क्सवादी रचनाकार है। उनकी संपूर्ण रचनाओं में उन्होंने विचारधारा का प्रक्षेपण कर समाज में जागृति व क्रान्ति चेतना का प्रसार किया है। दिव्या इस मामले में अनूठा है, क्यों कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का होने के कारण लेखक ने अपनी विचारधारा का संयमित प्रयोग कर सहजता से लेखनी चलाई है। यही कारण है कि 'दिव्या' यशपाल के अन्य उपन्यासों झूठा सच, दादा कॉमरेड, पार्टी कॉमरेड से सुंदर बन पड़ा है।

दिव्या का महत्व देखना हो तो दो स्तरों पर विचार करना होगा। प्रथम - संवेदना के स्तर पर और द्वितीय शिल्प के स्तर पर।

जहाँ तक संवेदनात्मक महत्व का विचार है तो यशपाल ने अपनी प्रगतिवादी दृष्टि एवं मानवतावादी विचारधारा का प्रयोग कर 'दिव्या' की मुक्ति और प्रकारान्तर में नारियों के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव का सुर छेड़ा है। जहाँ परंपरागत समाज में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेम्ब के माध्यम से यशपाल के नारी के प्रति भोगमूलक नजरिया, बौद्ध धर्म के माध्यम से निवृत्तिमूलक दृष्टिकोण एवं नारी को त्याज्य मानने का दृष्टिकोण को उभारा है तो वर्णाश्रम धर्म के माध्यम से नारी को परतंत्रकर कुलमाता जैसी उपाधियों में जकड़ने का।

यशपाल ने मारिश के माध्यम से नारी को सृष्टि के विकास का एक साधन बताकर नारी को एक सहजतामूलक स्थिति प्रदान करने पर बल दिया है जहाँ पुरुष व नारी एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हो। अन्त में दिव्या का कथन इसी बात की पुष्टि करता है -

"नारी का धर्म निर्वाण नहीं, सृष्टि का साधन है।"

अन्य स्तरों पर पृथुसेन के माध्यम से निम्न वर्गों के जन्म के अपराध की समस्या, प्तूल के द्वारा दास व्यवस्था की समस्या, राज्य का शोषक उपकरण के रूप में चित्रण, मारिश के माध्यम से परलोकवाद का खंडन कर इहलौकवाद की स्थापना भी किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का आधुनिक उपन्यास के रूप में महत्व स्थापित करती है।

शिल्प के स्तर पर भी यद्यपि मार्क्सवादी विचारक एवं रचनाकार रचना के 'रूप' को महत्व नहीं देते परन्तु तत्समी भाषा शैली, तत्कालीन शब्दों का प्रयोग (महाश्रेष्ठि, आख्यानागार, गणसेवक), सूत्र-भाषा आदि भी प्रगतिवादी परंपरा में एक नया उपादान है।

एक अन्य स्तर जो इसके महत्व को बहुगुणित करता है - वह है रचनाकार की वैचारिक तटस्थता। उपन्यास में रचनाकार ने कहीं भी विचारधारा का स्थूल व यांत्रिक प्रक्षेपण नहीं किया है। परस्पर विरोधी तत्वों को महत्व देकर, प्रलापों से बचकर संयम का परिचय देते हुए यशपाल ने 'दिव्या' के महत्व पर चार चाँद लगा दिये हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व पर विचार कीजिये।

मन्नू भंडारी द्वारा 1967 में रचित महाभोज उपन्यास अपनी गहरी राजनीतिक पड़ताल के कारण राजनीतिक परंपरा की के उपन्यासों की परंपरा में विशिष्ट स्थान रखता है यह विशिष्टता तब और बढ़ जाती है जब यह पता चलता है कि इसकी रचना पुरुष-प्रधान राजनीति के दौर में एक महिला रचनाकार द्वारा की गई है।

'महाभोज' की या महत्व सबसे पहले लेखिका के राजनीतिक सरोकारों की चरम अभिव्यक्ति के कारण है। राजनीतिक अवसरवादिता, संवेदनहीनता, दल-बदल, जनता की भावनाओं से कटाव, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण आदि कुछ ऐसी समस्याएँ है जो तब के समय में भी थी और आज के समय में भी। इन सभी समस्याओं को इतनी सूक्ष्मता से उभारना लेखिका की सूक्ष्मदृष्टि का ही परिचायक है।

अन्य स्तर पर उपन्यास का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्व सामाजिक समस्याओं को उठाने में भी है- जातीय समस्या के लिये जोरावर व हरिजनों की टकराहट, ग्रामीण व शहरी जीवन की विडंबनाओं का संपूर्ण चित्रण लेखिका ने किया है। दा साहब वोट हरिजनों का चाहते हैं परन्तु समर्थक जोरावर के हैं। इसी प्रकार नेताओं की दिखावे की राजनीति भी ग्रामीण समाज के प्रति उनकी संवेदनहीनता को उजागर करती है। जोरावर के माध्यम से उच्च वर्गों की निम्न वर्गों के प्रति नज़रिये का भी चित्रण है।

तीसरे स्तर पर उपन्यास का महत्व बुद्धिजीवियों की निष्क्रियता के चित्रण के कारण है। दत्ता ~~बाबू~~ बाबू के माध्यम से बिकी हुई पत्रकारिता, डी-आई-जी सिन्हा के माध्यम से पुलिस का भ्रष्टाचार उजागर करना आज के परिवेश का एहसास कराता है क्योंकि आज के युग में भी प्रैस-मीडिया का नियंत्रण, पुलिस सुधार जैसी मांगे आम हो चली है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा उपन्यास का महत्व इसके समाधान पक्ष के कारण भी है। लेखिका ने केवल समस्याओं पर ही चोट नहीं की है बल्कि बिट्टू, बिंदा एवं अन्ततः मिस्टर सक्सेना के माध्यम से उस 'दुर्निवार सम्मोहन भरी खतरनाक अग्निलीक' को भी जलाये रखा है जो इन सभी तत्वों के विरुद्ध प्रतिरोध जारी रखेगी।

शिल्प के स्तर पर छोटा उपन्यास, विषयानुरूप भाषा शैली, उचित प्रासंगिक व अवांतर कथाओं का अनुपात, गति-विराम का संतुलित होना, व आकस्मिकता, नाटकीयता, बिंब भाषा, सूक्त भाषा, सहज चरित्रों की उपस्थिति इसके महत्व को बहुगुणित कर देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास के माध्यम से यशपाल ने हिंदी उपन्यास में उपस्थित नारी-संबंधी चिन्तन में गहन हस्तक्षेप किया है। इस कथन के संदर्भ में 'दिव्या' उपन्यास के कथ्य पर विचार कीजिये। 20

'दिव्या' उपन्यास में यशपाल ने अपनी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।"- दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हुए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रश्न: ऐतिहासिक रचनाओं के संबंध में एक प्रश्न शाश्वत है कि इसमें इतिहास एवं कल्पना का अनुपात क्या रखा गया है एवं रचना करने हेतु इतिहास के तत्वों को विहित तो नहीं किया गया?

संभवत: यशपाल उठने वाले इन प्रश्नों से परिचित थे। तभी रचना की भूमिका में उन्होंने लिखा है-

"दिव्या इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना मात्र है"

यदि इतिहास सम्मत तथ्यों की बात की जाय तो चरित्रों के स्तर पर बृहद्रथ, पतंजलि, पुष्यमित्र एवं यवन आक्रमक मिलिंद उल्लेखनीय है वहीं स्थानों के स्तर पर साकल, मथुरा, मगध आदि स्थान इतिहास-सम्मत हैं

चरित्रों की बात करें तो यह बात सही है कि ईसा-पूर्व 185 ईस्वी में पुष्यमित्र शुंग ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मगध के शासक बृहद्रथ की हत्या कर ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना की। इसी के साथ साथ ईसा पूर्व 165 ईस्वी में पश्चिम-उत्तर भारत में यवनों के आक्रमणों व मिलिंद के शासन का उल्लेख भी मिलता है। पतंजलि का इतिहास में नाम केवल वैयाकरण के रूप में ही आता है परंतु यहाँ उन्हें पुष्यमित्र का पथ-प्रदर्शक बताया गया है।

व उपन्यास में देखें तो ये तीनों चरित्र केवल सूचना देने के रूप में आये हैं। किसी भी चरित्र को साक्षात उपस्थित नहीं किया गया है। हाँ! ये बात जरूर है कि उपन्यास के कुछ चरित्र इन चरित्रों के कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे रुद्रधीर ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना के संबंध में पुष्यमित्र के समकक्ष है।

स्थानों के संबंध में सागल एवं मथुरा का स्पष्ट वर्णन है जबकि मगध का केवल नाम आया है। सागल की स्थिति,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उसकी संस्कृति, मदिरा, दासों आदि के व्यापार का केन्द्र होना इतिहास सम्मत है। ऐसा ही उल्लेख मथुरा के संबंध में किया जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त वातावरणों को देते हुए एक अन्य स्तर पर ऐतिहासिक वातावरण का निर्वहन किया है - वह है भाषा शैली। अश्पाल ने न केवल तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है बल्कि तत्कालीन समाज में प्रयोग होने वाले शब्दों जैसे - गणसेवाहक, आस्थानागार, महाश्रेष्ठि आदि के प्रयोग से भी ऐतिहासिक जीवंतता बनाये रखी है।

जो भी हो, अश्पाल का उद्देश्य इतिहास का वर्णन न कर, इतिहास के तथ्यों को इस महत्व देकर ऐतिहासिक वातावरण में अपने कला के अनुराग से तत्कालीन समस्याओं का चित्रण कर वर्तमान समय के लिये उनके समाधानों हेतु उपयोगी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संकेतों की खोज करना था और इस कार्य में वे सफल भी रहे हैं। चाहे दिव्या के माध्यम से नारी की स्वतंत्रता को प्रतिपादित करना हो या मारिश के माध्यम से परलोकवाद का खंडन, भाग्यवाद का खंडन एवं भौतिकवादी दर्शन को सामने लाना हो, यशपाल ने परिपक्वता का परिचय दिया है

इस प्रकार यशपाल ने भूमिका में लिखे वाक्यों ~~के~~ के अनुसार (इतिहास विश्वास की नहीं, विश्लेषण की वस्तु है) ऐतिहासिक विषय-वस्तु का संतुलित प्रयोग कर इसे एक आधुनिक भाव-बोध से युक्त उपन्यास बना दिया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल की भाषा-शैली की विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फणीश्वरनाथ रेणु का आँचलिक उपन्यास मैला आँचल जिन दो नज़रों से इतिहास में अपनी छाप छोड़ता है - वे हैं अंचल का नायकत्व एवं भाषा शैली। वस्तुत: रचनाकार ने मानसिक व साहित्यिक दोनों स्तरों पर भाषायी बैत को समाल कर अंचल की संस्कृति के निरूपण हेतु भाषायी प्रयोग एक एक क्रान्ति ला दी है। उपन्यास की भाषा की मुख्य विशेषताएँ निम्न है-

(क) देशी- ग्राम्य शब्दावली का प्रयोग -
"तंत्रिमा टोली में आज धमाधम पंचायत हो रही है।"

(ख) अंग्रेजी शब्दों का विकृत रूप पेश करना जो ग्रामीण जीवन में बोला जाता है।
भैंसचरमन - (vice chairman),
रायबेरली - (Library)

(ग) कुछ जगहों पर पात्रानुकूल तत्सम शब्दों का प्रयोग विद्यमान है जैसे-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ० प्रशान्त की भाषा में 'सापेक्षवाद', 'मानवतावाद' जैसे शब्दों का आना।

(घ) मुहावरे व ~~कह~~ कहावतों का प्रयोग ताकि ग्रामीण लोक-संस्कृति पूरी प्रभावशीलता के साथ उभरे -

"माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठण्डा कर देता है।"

(ङ) सांस्कृतिक गीतों व ध्वनियों का बहुलता में प्रयोग -

"धपवा रंगाये सईंया, देहरी बैठायी गइले, फिरहु न लिहले, उदेस से भउजिया।"

'डिम-डिमिक-डिमिक'

(च) अंतर पाठ्यता का गुण जिसके अन्तर्गत ग्रामीण अंचल में विभिन्न ग्रन्थों की उक्तियों का प्रयोग संवादों में किया जाता है।

"हानि-लाभ, जीवन-मरण, जस-अपजस बिधि हाथ।"

(छ) सूत्र भाषा का प्रयोग -

प्रशान्त का कथना - 'मैं प्यार की खेती करूँगा।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ज) व्यंग्य क्षमता का अद्भुत प्रयोग - रेणु ने धार्मिक संदर्भों में महंत के दुष्कर्मों का आरोप भी व्यंग्यात्मक रूप में लक्ष्मी पर लगाकर महंतों के जीवन पर कटाक्ष किया है।

'सारा दोष तो लक्ष्मी का है।'

(झ) पार्वती की माँ, या गरीब बच्चों के वर्णन में बिंब क्षमता का भी अद्भुत प्रयोग मैला आँचल में दिखलाई पड़ता है।

इस प्रकार अपनी सामर्थ्यवान भाषा के बल पर रेणु ने आंचलिक उपन्यास की सशक्त धारा स्थापित की। यद्यपि बोधन की समस्या, गैर- आंचलिक पाठक हेतु दुरूहता, अंग्रेजी शब्दों के विकृत प्रयोगों की समस्या होते हुए भी मैला आँचल की भाषा अन्य सभी आँचलिक उपन्यासों में सबसे सशक्त नज़र आती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "महाभोज' में चित्रित यथार्थ आदर्शोन्मुख यथार्थ है।' इस मत के संदर्भ में 'महाभोज' उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this

'महाभोज' 1967 ईस्वी में 'मन्नु भंडारी' द्वारा लिखा गया सशक्त राजनीतिक उपन्यास है। उपन्यास में लेखिका ने राजनीतिक परिस्थितियों की गहरी पड़ताल करते हुए उनके समाधान के संकेत भी प्रस्तुत किये हैं।

यदि यथार्थ की बात करें तो लेखिका ने दा साहब जैसे चरित्रों के माध्यम से नेताओं का दोगलापन; सुकुल बाबू के माध्यम से दल-बदल, अवसरवादिता एवं भ्रष्टाचार; राव व चौधरी के माध्यम से पैसे की राजनीति की समस्या का वर्णन किया गया है। लेखिका का यह यथार्थ वर्णन इतना नग्न व तीखा है कि समय का अतिक्रमण कर आज का प्रतीत होता है।

इसी प्रकार प्रशासन के स्तर पर भी थानेदार एवं डी. आई. जी. सिन्हा के माध्यम से लेखिका ने प्रशासन में व्याप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भ्रष्टाचार एवं गरीबों के प्रति संवेदनहीन नज़रिये को प्रतिस्थापित किया है।

इस प्रकार का अवार्ड अन्य सामाजिक समस्याओं यथा जटिल समस्या एवं ग्रामीण-शहरी अंतराल की समस्या में दिखता है।

दिलचस्प बात यह है कि इतने चरम स्तर पर अवार्ड के आरोपण के बाद भी आलोचकों को इसमें आदर्शों के प्रक्षेपण की 'बू' आती है। आलोचकों का मानना है कि मि. सक्सेना जैसे चरित्रों में एक बिंदु की मौत पर अपने कॅरियर को दाँव पर लगाने का फैसला हवाई आदर्श के समान है। साथ ही बिन्दा का मित्रगत प्रभास, लखन, त्रिलोचन बाबु की विद्रोही चेतना भी अवार्ड के विपरीत है।

परन्तु तार्किक विश्लेषण करें तो चाहे सक्सेना का 'व्यक्तिवांतरण' हो या अन्य स्तर, लेखिका ने पर्याप्त परिस्थितियाँ जुटाई हैं वैसे भी सक्सेना का बदलाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समाज में 'सुलभ यथार्थ' के रूप में नज़र आये न आये, 'दुर्लभ यथार्थ' के रूप में तो नज़र आता ही है, जिसे नकारना संभव नहीं।

आज के युग में 'अशोक खेमका' जैसे अधिकार इसी यथार्थ की पुष्टि करते हैं।

इसी आधार पर इस उपन्यास के यथार्थ को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के बजाय चरम यथार्थवाद का प्रतिनिधि उपन्यास मानना ही उचित होगा।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation